सकारात्मक रहकर मेहनत करते रहें, जिंदगी एक ना एक दिन हमें सफल जरूर बनाती है-

आरती शर्मा, निजी सहायक

कॉलेज शिक्षा विभाग

मैं आरती शर्मा, मेरी पोस्टिंग कॉलेज शिक्षा विभाग में है। मैं वर्ष 2015-16 से स्टेनो कर रही थी। मेरा हमेशा से एक ही सपना था कि मेरी जिंदगी में एक दिन ऐसा आए जब मेरे पिता और परिवार को मुझ पर गर्व हो। इसके लिए मैने एक अच्छी सरकारी नौकरी का सपना देखा और जब स्टेनो सीखी तो इसी को अपना लक्ष्य बना लिया। मैने SSC स्टेनो की परीक्षाएं दी शुरूआत में मेरी मेहनत फीकी रही धीरे धीरे मैने खुद को और बेहतर बनाया। उसके बाद जब पूरी तैयारी से मैं परीक्षा देने को थी तो एक अड़चन के चलते मैं सेंटर पर 5 मिनट देर से पहुंची। मैने उनसे बहुत प्रार्थना की कि चाहे फेल हो जाऊं लेकिन प्लीज मुझे परीक्षा देने दे लेकिन ऐसा नहीं हो सका। अगले वर्ष मैंने फिर से SSC steno की पूरी तैयारी की समय से पहुंची भी लेकिन मेरे I-Card में मेरी जन्मतिथि का सिर्फ वर्ष लिखा था और मेरी इस गलती से मैं उस वर्ष भी परीक्षा नहीं दे सकी फिर भी मुझे हाईकोर्ट स्टेनो से पूरी उम्मीद थी, क्योंकि तब में 100 wpm Speed पर थी लेकिन तब भी में सफ़ल नहीं हो सकी क्योंकि मेरे शिफ्ट में डिक्टेशन की आवाज़ इतनी कम थी की डिक्टेशन सुनाई नहीं दी। बार बार ऐसी असफलताओं पर लगता था की शायद ये सब मेरी किस्मत में नहीं है। फिर भी मैने RSMSSB स्टेनो की पूरे मन से तैयारी की तब मैंने सोच लिया था की इतनी मेहनत करनी है की अगर कुछ ना भी कर सकी तो भी कभी खुद को दोष नही दूंगी। फिर मैने इस परीक्षा में पूरी मेहनत की जब भी मुझे लगता की अब मुझसे नहीं हो रहा मैं तब अपनी लिखी इस कविता **"एक दिन"** को दोहराती थी। मैने अपनी पिछली सभी गलतियों से सबक लेते हुए ध्यान से और पूरी तैयारी से परीक्षा दी और सफलता प्राप्त की।

एक बात भी मैने सीखी की अगर हम सकारात्मक रहकर मेहनत करते रहें तो जिंदगी एक ना एक दिन हमें सफल जरूर बनाती है।

एक दिन.....

अपने भीतर उठते तूफ़ान को मत रुकने दो
इस जलते जोश और जज्बे को ना बुझने दो
प्रति पल उठती गिरती ये लहरें हैं आशा और निराशा की
इन लहरों को ना बंधने दो
तो क्या हुआ ये लहरें टकराकर सागर में लौट आयेगी
क्या हुआ सांप सीढ़ी के खेल में मात तुम्हारे हिस्से भी आयेगी
हां कभी किस्मत कमज़ोर तो कभी मेहनत नाकाम रह जायेगी
हां कुछ **"मीठी बातें"** तुम्हारी प्रतिभा पर प्रश्न उठाएगी

फिर भी, मात्र गिरने के डर से तुम संभलना ना छोड़ो
अपने पंखों पर रख भरोसा उड़ान का उत्साह बनाए रखो
पग पग आगे बढ़ने से मिट जाएंगे फासले
निरंतर चलने की हिम्मत बनाए रखो
और फिर एक दिन हर मुश्किल आसान हो जाएगी
एक दिन हर राह मंजिल तक लेकर जाएगी
खड़े होंगे तुम अपनी मंजिल के बेहद करीब
बस छूने भर की देर होगी
जो पीछे मुड़कर देखोगे,
तो खत्म होती संघर्ष की राहें मन को राहत पहुंचाएगी
जब छू लोगे मंजिल को तो पा लोगे उस खुशी को
जिसकी चाहत में कितनी खुशियां छूट गई
वह दिन सिर्फ तुम्हारा होगा
जिसकी चाहत में कितनी रातें कुर्बान हुई
शून्य से खाली हाथों में शतक भी एक दिन चमकेगा
जब मिट्टी की धूल से शुरू सफर पर्वत चोटी पर पहुंचेगा
हां **वह दिन** सिर्फ तुम्हारा होगा
बस आंखों में लक्ष्य, हाथों में मेहनत और
मन में विश्वास बनाए रखो
मन में विश्वास बनाए रखो।

आरती शर्मा
निजी सहायक
कॉलेज शिक्षा विभाग